भजन

तर्ज–लागी जिसकी वही ये दुख जाने

लागी वाली कुछ और न देखे,पिया में दिन रैन रहे
पिया रस मे मगन भई,ना कुछ मुख थें कहे

1–इक अग्नि तेरे विरह की,दूजी इश्क की होए
जब लग न तोहे देखूं प्रीतम, चैन नाही मोहे

2–विरह जाने विरहनी,जो मिल के बिछुरी होए
ज्यों मीन बिछरी होए जल थें, या गत जाने सोए

3–आशिक प्यारी पिउ की,ना जाने वाको कोए
ना ऊपर देखावहीँ, यों आशिक छिपी रोए